International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

अमृता शेरगिल के चित्रों में विषय-वस्तु

डॉ. अनुराधा आर्य

एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्षा
चित्रकला विभाग, कन्या महाविद्यालय, आर्य समाज, भूड, बरेली, उत्तर प्रदेश

संक्षेप

भारतीय कला जगत में प्रथम आधुनिक महिला चित्रकार के रूप में विख्यात भारतीय पिता और हंगेरियन माता की बेटी अमृता शेरगिल की कला शिक्षा यद्यपि पेरिस में हुई, परंतु भारत के ग्रामीण परिदृश्य ने उनकी कला विषय-वस्तु में एक विशेष परिवर्तन ला दिया। चूंकि संवेदनशील कलाकार भी एक सामाजिक प्राणी है और समाज व पारिवार की विविध परिस्थितियों के संघर्ष का उसकी रचनाओं पर प्रभाव न पड़ना असंभव है। अपने जीवन काल में अमृता ने पेरिस, हंगरी, भारत आदि देशों की संस्कृतियों तथा वातावरण से साक्षात्कार कर प्राप्त अनुभूतियों को अपनी कलाकृतियों में उतारा।

स्वाभिमानी और अहंवादी अमृता के मन-मस्तिष्क में अनगिनत विस्मयकारी कल्पनाओं, प्रतीकों और विषयों का संग्रह था, जिसके परिणामस्वरूप ही उनकी तूलिका से व्यक्ति-चित्र, आत्म-चित्र, दृश्य-चित्र, नग्न-चित्र, वस्तु-चित्र, पशु-चित्र तथा दैनिक जीवन के चित्र की श्रंखलाऐं रूपायित हो उठीं। अतः सत्य विदित है कि कलाकार के लिए उसका वातावरण, उसके आचार- विचार और तत्कालीन सम्पूर्ण प्रवृत्तियाँ उसकी प्रेरणा के स्त्रोत होती हैं। उसकी कलाकृति में उससे पूर्व के समस्त युग की अभिव्यक्ति परिलक्षित होती है। प्रस्तुत शोध पत्र में अमृता शेरगिल द्वारा चित्रित विविध विषय-वस्तुओं पर प्रकाश डाला गया है।

शब्द कुंजी: विषय-वस्तु, अनुभूतियाँ, परिदृश्य, प्रत्याघात, अभिव्यक्ति

रूप, स्वरूप और आकार के संसार में विचरण करने वाली कला के राज्य में आकार, रंग, कल्पना, लय और गति का आधिपत्य होता है। यह अपने क्षेत्र में उन समस्त अनुभवों को खींच लाती है, जिनका उपयोग यह अपेक्षित समझती है तथा जिनकी सहायता से ही चित्र में विषय-वस्तु का निर्माण होता है।

कलात्मक गतिविधि शून्य में नहीं होती, एक विशेष सामाजिक वातावरण में, मानवीय स्व गतिविधि में संभव है। सत्य ही कहा गया है "अभिव्यक्ति के लिए विचार की अनुपस्थित में हस्तलेख बंजर ही रह जाता है, विचार तब तक असंभव रहते हैं जब तक इसे पैदा करने के लिए कोई मूर्त उत्तेजक न हो और यह मूर्त उत्तेजक कलाकार को उस बाह्य संसार से ही प्राप्त हो सकता है, जिसमें वह रहता है।" [1]

जन्म से ही संवेदनशील, सचेत और विकासशील प्राणी कलाकार के सम्मुख दो वस्तुएं होती हैं: एक वह स्वयं, और दूसरा उसके अतिरिक्त यह पूरा संसार। उसकी समस्त क्रियाओं का संबंध इन्ही दोनों से रहता है। इन दोनों पक्षों का संपर्क तथा संघर्ष निरंतर चलता रहता है, जिसके परिणामस्वरूप कलाकार की रचना में भिन्न-भिन्न विषय-वस्तु अपना

आकार लेते रहते हैं। रवीन्द्र नाथ टैगोर भी स्वीकार करते हैं कि “कला की विषय-वस्तु दैवी सौंदर्य और भव्यता से परिपूर्ण अलौकिक जगत से प्राप्त होती है।” [2]

सन् 1913 में भारतीय सिख पिता तथा हंगेरियन माता से जन्मी अमृता शेरगिल ने जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन के जितने रूपों का अवलोकन एवं अनुभव किया, उतने ही रूप उनकी रचनाओं में दृष्टिगोचर होते हैं। हंगरी, भारत, पेरिस आदि देशों की संस्कृतियों तथा वातावरण ने अमृता को अपनी रचनाओं के लिए विविध प्रकार की विषय-वस्तु उपलब्ध करायी तथा उस वातावरण में पलने वाली अनुभूतियों से साक्षात्कार कराया। उनके चित्र उनके जीवन की अनुभूतियों का परिणाम है। उनकी कला, विचार, व्यक्तित्व तथा विषय-वस्तु में हंगरी व भारत का अपूर्व समन्वय दिखाई देता है।

चिंतामणि के अनुसार “अमृता के चित्र केवल स्वानुभूतियों और अंतःरूचियों की ही अभिव्यंजना नहीं हैं, बल्कि व्यक्ति तथा समाज के स्थायी संकलित अनुभवों और मूल्यो के संयोजन का प्रतिफल है।” [3]

आरंभ से ही लघुमार्ग में विश्वास न करने वाली स्वाभिमानी और अहंकारी अमृता ने जीवन के पायदानों पर चढ़ते हुए अपनी रूचि व स्वभाव के अनुसार विभिन्न विषयों का चयन करके अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया। सीखना, सही ग्रहण करना और कुछ आदर्श, स्थायी व विशिष्ट रचना करने की मात्र अभिलाषा के साथ अमृता ने कल्पना को शक्तिशाली रूप से प्रभावित करने वाले साहित्य ही नहीं वरन् अपनी रूचि के चार विषय पुराण, इतिहास, रोमांस और कविता आदि का भी गहन अध्ययन किया। इस अध्ययन की विशाल मात्रा और साहित्यक चित्त की लवलीनता से स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने 15 से 16 वर्षो के अल्प समय में अपने मस्तिष्क में कितनी विस्मयकारी कल्पनाओं, प्रतीकों और विषयों का संग्रह कर रखा था।

कलाकार के लिए उसका वातावरण, उसके आचार-विचार और तत्कालीन सम्पूर्ण प्रवृत्तियाँ उसकी प्रेरणा के स्त्रोत होती हैं। उसकी कलाकृति में समस्त युग की अभिव्यक्ति परिलक्षित होती है। इस तथ्य को स्वीकारते हुए अमृता स्वयं कहती हैं कि “किसी भी देश की कला वहाँ के लोगों के मनोविज्ञान की प्रतिच्छाया होती है।” [4]

इस प्रकार अमृता के आस-पास विस्तारित जीवन लीला में रंगों और स्वरूपों के आघात-प्रत्याघात के अनुभव तथा मन में संचित भावों की चित्रों में अभिव्यक्त विषय-वस्तु को प्रमुखतः सात खंडों में विभक्त किया गया है: (1) व्यक्ति-चित्र, (2) आत्म-चित्र, (3) दृश्य-चित्र, (4) नग्न-चित्र, (5) वस्तु-चित्र, (6) पशु-चित्र, (7) दैनिक जीवन के चित्र।

(1) व्यक्ति-चित्र

प्रारंभ से ही मानवाकृति एवं मुखाकृति चित्रण में रूचि रखने वाली अमृता को पेरिस में एकेड्मिक कला-शिक्षा के अंतर्गत अपनी इस प्रतिभा को निखारने का सुअवसर प्राप्त हुआ और उन्होंने अपने कला गुरूओं के निर्देशन में बहुत से व्यक्ति-चित्रों को बनाया, जिनमें पोर्ट्रेट ऑफ यंग मैन, पोर्ट्रेट ऑफ माई सिस्टर, यंग मैन विद एप्पल, मारी लुइस चैजनी, पोर्ट्रेट स्टडी, पोर्ट्रेट ऑफ यंग वुमन, यूसुफ अली खान, माई ग्रांड मदर, वुमन इन ब्लू कोट प्रमुख हैं।

भारत आने के बाद अमृता ने व्यक्ति-चित्रण की श्रंखला में गर्ल इन ब्लू, मैल्कम मुगरिज, मैन इन व्हाइट, पोर्ट्रेट ऑफ फादर, वुमन विद सन फ्लावर, सुमेर, लीला मेहता, पोर्ट्रेट ऑफ सिस्टर, सुंदर सिंह मजीठिया, जोजी, पोर्ट्रेट ऑफ राजा

ऑफ कालेंगोड, पोर्ट्रेट ऑफ शकुन्तला कपूर, पोर्ट्रेट ऑफ हेलेन, सुंदर कृपाल सिंह मजीठिया आदि चित्र बनाये, जिनमें से अधिकतर उनके मित्र तथा सगे-संबंधियों के व्यक्ति-चित्र थे।

“व्यक्ति-चित्रों के अंकन में अमृता ने बाद में जो दक्षता प्राप्त की, उसके अंकुर प्रारंभिक चित्रों के माध्यम से परिलक्षित होते हैं। जीवन की पूरी सादगी और मस्तिष्क के पूरे चिंतन को मुखमंडल और शरीर पर उतार लाना ही व्यक्ति-चित्र को अन्य चित्रों की श्रेणी से अलग करता है और यह पकड़ अमृता में प्रारंभिक दिनों से ही थी, इसमें कोई संदेह नहीं।” [5]

भारत में व्यक्ति-चित्रण की ओर अधिक झुकाव का कारण पूछने पर अमृता ने कार्ल खंडेलवाल को एक बार कहा था कि वह व्यक्ति-चित्रण में अधिक रुचि के कारण नहीं अपितु धनोपार्जन हेतु व्यक्ति-चित्रों को बनाती हैं, ताकि वह अपने माता-पिता पर अतिरिक्त बोझ न डाल सकें। उनके इस कथन का प्रभाव ड़ॉ विक्टर ईगन से विवाह के बाद स्पष्ट देखा जा सकता है, जिसमें व्यक्ति-चित्रों के स्थान पर हंगरी व भारतीय सामाजिक विषयों का अंकन बहुतायत में हुआ है।

(2) आत्म-चित्र

पेरिस के स्वच्छंद और उन्मुक्त वातावरण ने अमृता को पूर्व में उपजी हीन भावना तथा पारिवारिक तत्वों से उबरने का एक अच्छा अवसर प्रदान किया, परिणामस्वरूप अपनी प्रतिभा और व्यक्तित्व उजागर करने के लिए अमृता ने आत्म-चित्रों को बनाना प्रारंभ किया। इस प्रकार एकेडमिक शिक्षा काल में अमृता ने अपने आत्म-चित्रों की श्रृंखला बना डाली। कहीं-कहीं अमृता ने आकर्षण बढाने के लिए चटक रंगों तथा निःवस्त्र आत्म- चित्रों की रचना भी की है।

“इन चित्रों में जहाँ रंगों के प्रयोग में उनकी दिन-प्रतिदिन बढती प्रौढ़ता का इतिहास छिपा है, वहीं उनकी मानसिकता भी सुस्पष्ट रूप में परिलक्षित हुई है। आत्म-चित्र अमृता की अपनी तलाश के चित्र है। अपने सही अस्तित्व को खोजने में वे निरंतर प्रयत्नशील रही हैं, ये चित्र इस बात का भी प्रमाण हैं। अपने प्रारंभिक जीवन में उनका ध्यान प्रयोगों पर रहा है, किंतु कभी भी आत्मतुष्टि की स्थित में नहीं रहीं। इन प्रयत्नों और जूझने वाली प्रक्रियाओं से उनकी चिंतन-शक्ति को दृढ़ता और साहसिकता दी है, जो इन आत्म-चित्रों में स्पष्ट रूप से उभर कर आई है।” [6]

अमृता ने प्रायः सभी आत्म-चित्र पेरिस निवास के समय ही बनाये है, भारत आने के उपरांत उनकी आत्म-चित्र श्रृंखला में एक लंबा ठहराव दृष्टिगोचर होता है।

(3) दृश्य-चित्र

ज्यों-ज्यों अमृता हंगरी, पेरिस तथा भारत के प्राकृतिक वातावरण तथा परिदृश्यों से साक्षात होती रहीं, त्यों-त्यों उनके चित्रों की विषय-वस्तु में वे अपना स्थान बनाते रहे। यदपि अमृता की रूचि मानवाकृति की ओर अधिक थी, परंतु दृश्य-चित्रों हेतु उनहोंने विशेष रूप से हंगरी व भारत के ग्रामीण दृश्यों को ही चुना। इन दृश्य-चित्रों को उन्होंने अपने संयोजनों की पृष्ठभूमि में भी निरंतर प्रयुक्त किया। भारत में शिमला और सराया के अतिरिक्त दक्षिण भारत के ग्रामीण और पहाड़ी दृश्यों से उत्प्रेरित होकर अमृता ने ए ब्लेज़ सीन, हिल सीन, आदि प्रमुख दृश्य-चित्रों को बनाया।

ग्रामीण जन-जीवन से विशेष लगाव के कारण ही अमृता ने विवाहोपरांत हंगरी में निवास हेतु ग्रामीण क्षेत्र को ही चुना तथा जून 1938 से जुलाई 1939 के एक वर्ष के समय में जीवेंजी के ‘नैव’ लोक कलाकारों, पापुलिस्ट स्कूल के नेता इस्तवान सोजनोई तथा ब्रूघेल द एल्डर जैसे कलाकारों से अत्यधिक प्रभावित रहीं।

(4) नग्न-चित्र

पेरिस में एकेडमिक शिक्षा के अंतर्गत नग्न-अध्ययन में अमृता ने विशेष रूचि दिखलाई, जिसमें उन्होंने अधिकतर स्त्रियों के नग्न-चित्रों का ही निरूपण किया। न्यूड स्टडी नामक नग्न-चित्र श्रंखला के अतिरिक्त अमृता ने सिटिंग न्यूड, रिक्लाइनिंग न्यूड, प्रोफ़ेशनल माडल, न्यूडिटी ग्रुप आदि शीषर्कों से भी नग्न-चित्र बनाये।

“वास्तविक मानवाकृति के साथ अमृता शेरगिल ने वस्तुगत दृष्टि और कलात्मक दृष्टि दोनों का बराबर उपयोग किया है। शरीर के कामपक्ष पर कलात्मक प्रस्तुति की विजय इन चित्रों में स्पष्ट रुप से दृष्टव्य है। ये चित्र अमृता ने पेरिस में अंकित किये थे, जो उनके बाद के कला विकास को समझने में महत्वपूर्ण कड़ी है। चित्रकार की निर्भीकता और ईमानदारी के भी ये चित्र साक्षी है। शरीर के ऐन्द्रिक सौंदर्य और प्रभावोत्पादकता के दर्शन की जो शक्ति अमृता में थी, वह इन चित्रों के माध्यम से प्रकट हुई है।” [7]

एकेडमिक शिक्षा के बाद जब अमृता भारत लौटीं तो शायद ही उन्होंने कोई नग्न-चित्र बनाया, परंतु विवाहोपरांत हंगरी में निवास के समय अमृता द्वारा बनाए गए दो नग्न-चित्र न्यूडिटी तथा टू गर्ल विशेष महत्व रखते हैं, चूंकि ये समस्त पूर्व निर्मित नग्न-चित्रों से भिन्न हैं।

(5) वस्तु-चित्र

1927 में मामा इरविन वक्टे के निर्देशानुसार अमृता ने साक्षात देखकर चित्रों को बनाते हुए पेरिस की कला अकादमी में जहाँ एक ओर आत्म-चित्रों, व्यक्ति-चित्रों तथा नग्न-चित्रों को निरूपित किया, वहीं वस्तु-चित्रण में भी पीछे न रहीं। यदपि निर्जीव वस्तुओं के चित्रण में उन्हे विशेष रुचि न थी, फिर भी अपने आस-पास सहज उपलब्ध वस्तुओं को चित्रण हेतु चुना और पोटेड प्लांट इन ब्लाजम, वाइन, ग्रेप्स, स्टिल लाइफ विद वायलिन, बोट, ड्रेसिंग टेबल आदि वस्तु- चित्रों का सृजन किया।

(6) पशु-चित्र

प्रारंभ से ही प्राकृतिक वातावरण में पली-बढी अमृता ने बहुत से जंगली तथा घरेलू पशु-पक्षियों को देखा, परंतु भारत के ग्रामीण पशुओं ने उसे विशेष रूप से प्रभावित किया। अजंता को देखने के बाद अमृता में पशु-चित्र बनाने की प्रेरणा बलवती हुई, तत्पश्चात उन्होंने अपने चित्रों में भारतीय पशु जैसे गाय, बैल, ऊँट, घोड़े तथा हाथी आदि को चित्रित करना प्रारंभ किया। अपने संयोजनों में अमृता ने इन पशुओं को मानवाकृतियों के साथ चित्रित किया। एलीफेंट्स बाथिंग इन ग्रीन पूल, थ्री बुलक कार्ट्स, फीडिंग एलीफेंट, होर्स एण्ड ग्रूम, एलीफेंट प्रोमेन्ड, टू एलीफेंट्स, केमल्स आदि रचनाओं में अमृता के पशु-चित्र विषयों को स्पष्ट देखा जा सकता है। उनकी अंतिम अधूरी कृति भी एक गौशाला पर आधारित है जो उनके पशु-चित्रण की ओर झुकाव को दर्शाती है।

(7) दैनिक-चित्र

बचपन से ही विभिन्न स्थानों व देशों का भ्रमण करते हुए अमृता ने वहां के शहरों व ग्रामीण जीवन शैली का अवलोकन किया, परंतु उन्हे प्रारंभ से ही शहरी जीवन की अपेक्षा ग्रामीण जीवन अधिक प्रिय था, जिसे उन्होंने अपने अधिकतर चित्रों के विषय रूप में चुना।

सर हरबर्ट रीड के अनुसार “कला कभी शून्य में खड़ी नहीं होती बल्कि वह समाज के समूचे रूप में जिंदगी से घुल मिल कर चलती है।” [8] पेरिस कला शिक्षा के उपरांत जब अमृता भारत लौटीं तो उनके चित्रों में भारत भ्रमण के बाद एक नवीन परिवर्तन आ गया। सराया, शिमला और दक्षिण भारत के ग्रामीण परिवेश में अमृता के अंतर्जगत को प्रभावित कर उस विषय-वस्तु को अपने चित्रों में उतारने को बाध्य कर दिया। जैसा कि अमृता के शब्द स्वीकाराते हैं “जैसे ही मैंने भारत की जमीन पर कदम रखा, न केवल विषय और आत्मा की दृष्टि से, बल्कि तकनीकी अभिव्यक्ति की दृष्टि से भी मेरी कला में एक विशेष परिवर्तन आ गया, जो बुनियादी तौर पर अधिकांश भारतीय था। मुझे अपनी कला मंजिल का सही अहसास हुआ कि मैं भारतीय और खासकर गरीब भारतीयों की जिंदगी की चित्रात्मक अभिव्यक्ति करूँगी, उन चुप्पी साधी हुई आकृतियों के अनंत समर्पण और धैर्य को रंग दूंगी।” [9]

ग्रुप ऑफ थ्री गर्ल्स, मदर इंडिया, बेग्गर्स, हिल वुमेन, हिल मैन, वुमेन होल्डिंग फैन, टू वुमेन, लिटिल अनटचेविल चाइल्ड वाइफ, फ्रूट वेंडर्स, गर्ल विद पिचर, ब्राइड्स टायलेट, ब्रह्मचारीज, द स्टोरी टेलर, सिस्टा, साउथ इंडियन व्लेजर्स गोइंग टू मार्केट, ड्रेसिंग द ब्राइड, व्लेज गर्ल, रेड क्ले एलीफेंट, वुमन इन रेड, द वरांडा विद रेड पिलर, वन मेंडीकेंट, टू मेंडीकेंट, इन द लेडीज एनक्लोजर, व्लेज ग्रुप, व्लेज चिलडर्न, रेस्टिंग, एन्सियेंट स्टोरी टेलर, द स्विंग, वुमेन रेस्टिंग ऑन चारपाई, द ब्राइड्, वुमेन एट बाथ, हल्दी ग्राइंडर्स, रेस्टिंग मदर आदि भारत में बने चित्र अमृता के उक्त कथन का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, जिसमें अमृता ने भारतीय ग्रामीण जनमानस की साधारण एवं सरल दिनचर्या व जीवन शैली को अपनी रचनाओं में एक विशिष्ट स्थान प्रदान किया।

भारत के अतिरिक्त अमृता जब पेरिस तथा हंगरी में रहीं तब भी दैनिक जीवन व क्रियाकलापों को वहीं के परिवेश तथा वातावरण में चित्रित करने से स्वयं को रोक न पायीं। हंगेरियन व्लेज चर्च, ओपन एयर पेंटर्स, डिपार्टमेंट स्टोर, स्पेनिश गर्ल, स्लीप, व्यू फ्रोम स्टूडियो, द पोटैटो पीलर, द मेरी केमेस्ट्री, हंगेरियन चर्च स्टेपल, हंगेरियन मार्केट सीन, हंगेरियन पीजेंट आदि कृतियों में अमृता ने दैनिक जीवन जैसे विषयों को मूर्त रूप प्रदान किया है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि अमृता के चित्रों में उतरे विविध विषय उनके व्यक्तित्व एवं अनुभवों के विविध पक्षों की ओर इंगित करते हैं, जिसे अमृता ने अपने अल्प जीवनकाल की विशिष्ट कल्पनाओं, अनुभूतियों, आकांक्षाओं, दृष्टिकोणों, विचारों तथा अभिप्रेरणाओं से आत्मसात किया। जीवन की यथार्थताओं, समस्याओं, मनोवैज्ञानिक प्रभावों तथा विषमताओं को लेकर जो भाव अमृता के अंतर्जगत को उद्वेलित कर गये, उसी के अनुकूल उनके चित्रों में विषयों का अंकन किया गया।

संदर्भ ग्रंथ

1. **सौंदर्य का तात्पर्य – ड़ॉ. राम कीर्ति शुक्ल**, **पृ**. 75
2. **कला, सौंदर्य और जीवन – प्रो. रणवीर सक्सेना**, **पृ**. 77
3. **अमृता शेरगिल – चिंतामणि व्यास**, **पृ**. 13
4. **अमृता शेरगिल – कन्हैया लाल नंदन**, **पृ**. 93
5. **अमृता शेरगिल – चिंतामणि व्यास**, **पृ**. 27
6. **वही – पृ**. 29
7. **वही – पृ**. 29
8. **अमृता शेरगिल – कन्हैया लाल नंदन**, **पृ**. 53
9. **वही – पृ**. 55